राजस्थान सामान्य ज्ञान

लोककला/ हस्तकला

कला व संस्कृति

हस्तलिखित नोटस

BY AADARSH KUMAWAT

Rajasthan GK

5000 प्रश्न

टेस्ट देकर पढें और तैयारी को नई दिशा दें

टॉप 1000 प्रश्न
ई - बुक सामान्य ज्ञान
डाउनलोड करलो

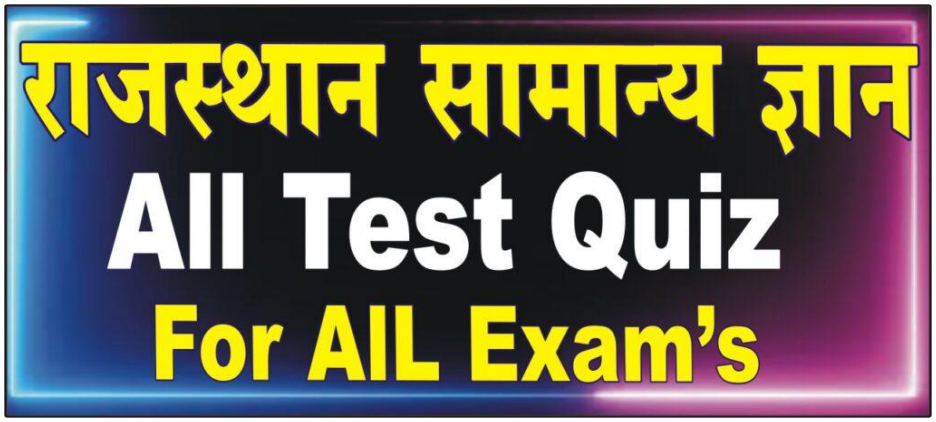

राजस्थान सामान्य ज्ञान
All Test Quiz
For AlL Exam's

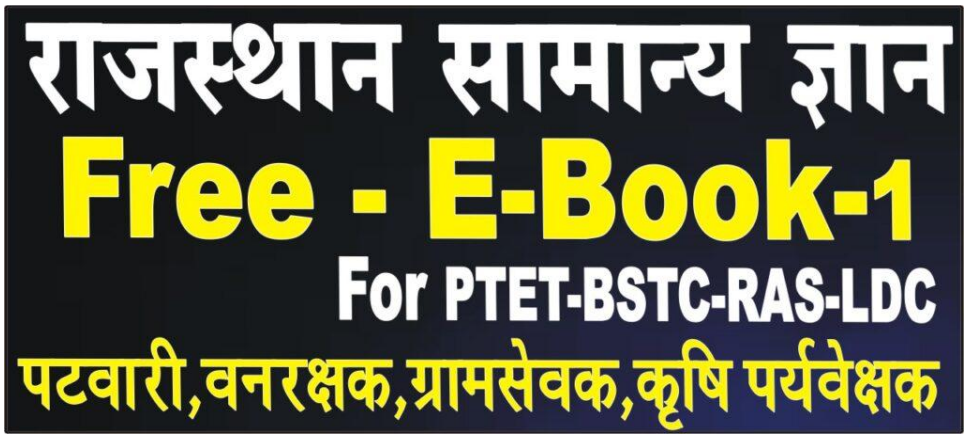

राजस्थान सामान्य ज्ञान
Free - E-Book-1
For PTET-BSTC-RAS-LDC
पटवारी,वनरक्षक,ग्रामसेवक,कृषि पर्यवेक्षक

सम्पूर्ण नोट्स PDF
विषयवार ई–बुक
सभी PDF यहां से डाउनलोड करें

सामान्य विज्ञान
500 - Questions
PDF डाउनलोड

राजस्थान की प्रमुख लोक कलाएं एवं हस्तकलाएं

पड़ चित्रण

खादी व रेजी के कपड़े पर लोकदेवताओं की जीवनगाथाएं पौराणिक कथाएं एवं धार्मिक गाथाओं के चित्रित रूप को ही पड़ कहा जाता है।

⇒ शाहपुरा (भीलवाड़ा) पड़ चित्रण का मुख्य केन्द्र है।
⇒ जोशी गोत्र के छीपे पड़ चित्रित करते है जिन्हे चितेरा कहा जाता है
⇒ श्री लाल जोशी इसके ख्यातिप्राप्त चितेरे है।
= श्रीमति पार्वती जोशी देश की प्रथम पड़ चितेरी महिला है।
⇒ भोपो द्वारा पड़वाचन किया जाता है।

⟹ पाबूजी की पड़ = नायक या आयडी भोपो द्वारा मुख्य वाद्य यंत्र - रावणहत्था, सबसे लोकप्रिय पड़ भोपे व भोपिन द्वारा रात्रि मे वाचन, इस पड़ में मुख के सामने "भाले" का चित्रण होता है तथा पाबूजी की घोड़ी "केसर कालमी" को काले रंग से चित्रित करते है।

⇒ देवनारायण जी की पड़ - गूजर भोपो द्वारा वाचन वाद्य = जन्तर = देवनारायण जी की पड़ चित्रांकन में सर्प का चित्र होता है तथा इनकी घोड़ी 'लीलागर' को हरे रंग से चित्रित किया जाता है।
- सबसे पुरानी पड़, सबसे अधिक चित्रांकन सबसे लम्बी गाथा वाली पड़, ⇒ वाचन दो या तीन भोपो द्वारा रात मे

⇒ रामदेव जी की पड़ = कामड़ जाति के भोपो द्वारा वाचन वाद्य = रावणहत्था, रामदेवजी की जीवनगाथा का चित्रण। रामदेवजी की सर्वप्रथम पड़ चित्रांकन चितेरे चौथमल चितेरे थे

⇒ रामदला व कृष्णदला की पड़ = भाट जाति के भोपो द्वारा एकमात्र बिना किसी बाधा के,
इन पड़ो में समस्त चराचर जगत के लेखे-जोखो के चित्रण के साथ राम अथवा कृष्ण के जीवन की प्रमुख घटनाओ का चित्रण किया जाता है।
वाचक हाड़ौती क्षेत्र में अधिक, वाचन दिन में किया जाता है।
सर्वप्रथम चित्रांकन शाहपुरा के धूलजी चितेरे ने किया।

। अन्य-महत्वपूर्ण लोक कलाएँ ।

⇒ मांडणा = मांगलिक अवसरो पर महिलाओं द्वारा घर-आंगन को लीपपोत कर खड़िया, व गेरू से अनामिका की सहायता से ज्यामितीय अलंकरण बनाए जाते है, जिन्हे मांडणे कहते है।

⇒ कठपुतली : मारवाड़, नटो का मुख्य स्थल, कठपुतली बनाने का काम आमतौर पर उदयपुर व चितौड़गढ़ में होता है।
स्वर्गीय श्री देवीलाल सामर ने कठपुतली को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाई

⇒ तोरण : विवाह के अवसर पर दुल्हन के घर के मुख्य प्रवेश द्वार पर लटकायी जाने वाली लकड़ी की कलाकृति, जिसके शीर्ष पर मयूर बना होता है। कहीं पर तोरण के स्थान पर मोवण (माणकथम्भ) का भी प्रचलन है।

⇒ कावड़ : कावड़ विविध कपाटों में खुलने व बंद होने वाली मन्दिरनुमा काष्ठ कलाकृति है जिस पर विभिन्न प्रकार के धार्मिक व पौराणिक कथाओ से संबंधित देवी-देवताओं के मुख्य प्रसंग चित्रित होते है।
कावड़ बनाने का कार्य बस्सी गांव के खेरादी जाति के लोग करते है।
⇒ कागज पर बनी कला पना कहलाती है।
⇒ कावड़ के प्रसिद्ध कलाकार प्रभात जी सुथार है।

Neel Kamal Date___ Page___

⇒ चोपड़े - कुंकुम, अक्षत, चावल आदि रखने हेतु लकड़ी का पात्र
⇒ बाजोट : भोजन व पूजा थाल आदि के नीचे रखी जाने वाली चौकी
⇒ बेवाण - लकड़ी के बने देव विमान, देवझूलनी एकादशी पर झांकी
⇒ छापे : कपड़े पर हाथ से छपाई में प्रयुक्त लकड़ी के छापे
⇒ खांडे - होली अवसर पर लकड़ी के तलवारनुमा खाण्डे बनाये जाते
⇒ सांझी = कन्याओं का रंगीन व्रतोत्सव, आश्विन में कुल 15 दिनतक गौरी (पार्वती) के रूप में सांझी की प्रतिष्ठा
जयपुर में लाडलीजी के मन्दिर, उदयपुर का मछन्दरनाथ मंदिर अपनी सांझियों के लिए प्रसिद्ध है।
⇒ गोदना - अंग चित्रांकन की विशिष्ट कला, अंगों में सुई या कांटे से आकृति बनाने के बाद उस पर कोयला व खेजड़े के पत्तों का काला पाउडर डाला जाता है सूखने के बाद हरी झाई उभर आती है इसे गुदना या गोदना कहते हैं।

⇒ पिछवाइयाँ = देवी-देवताओं के मन्दिरों में बड़े आकार के पर्दे पर किया गया चित्रण पिछवाईयां कहलाती है।
नाथद्वारा की पिछवाईयां विशेष प्रसिद्ध है।

⇒ बटेवड़े या थापड़ = ढूंढाड़ क्षेत्र में बनाए जाने वाले गोबर के थेपड़े लोककला के अनूठे दस्तावेज है।
चारों तरफ से गोबर से बंद सूखे उपलों के ढेर को थेपड़े कहते

⇒ हीड़ = मिट्टी का बना पात्र, ग्रामीण क्षेत्रों में बच्चे दिपावली पर तेल व रुई के बिनौले जलाकर परिजनों से आशीर्वाद
हीड़ो दीवाली तेल मेलो कहकर लेते है

⇒ घोड़ा बावजी : मिट्टी के बने कलात्मक घोड़े, भील, गरासिया में मान्यता
⇒ मोण : मेड़ता क्षेत्र में मटके को मोण कहते है।
⇒ सोहरियां : कलात्मक पात्र जिसमें भोजन सामग्री रखी जाती है।
⇒ कोठियाँ : ग्रामीण अंचलो में अनाज संग्रह हेतु पात्र

राजस्थान की हस्तकलाएं Handicrafts

⇒ ~~कपड़े~~

⇒ बन्धेज का कार्य = जोधपुर, जयपुर, बीकानेर व शेखावाटी
'लहरिया व पोमचा - जयपुर का प्रसिद्ध है।
पोमचा पीले रंग का एवं चारों ओर किनारों पर लाल रंग का होता।

⇒ कपड़े पर हाथ से छपाई = लगभग सम्पूर्ण राजस्थान में
छपाई कार्य करने वाले को "छीपे" कहते है;
सांगानेर के छीपे नामदेवी छीपे कहलाते है।
बाड़मेर के खत्री जाति के लोग परम्परागत छपाई कार्य करते।

प्रसिद्ध छपाई वाले स्थान जैसे।
⇒ अजरख प्रिंट = बाड़मेर = नीला व लाल रंग अधिक प्रयुक्त
⇒ मलीर प्रिंट — " ⟶ कत्थई एवं काला रंग प्रयुक्त
⇒ आजम प्रिंट = आकोला (चित्तौड़गढ़) छपाई के घाघरे प्रसिद्ध है।
⇒ सांगानेरी प्रिंट = सांगानेर (जयपुर)
⇒ बगरू की बगरू प्रिंट = कपड़ों की रंगाई का कार्य नीलगरों व रंगरेजों द्वारा

⇒ गलीचे, नमदे व दरियां = गलीचे के लिए जयपुर प्रसिद्ध है।
अब गलीचे टोंक, ब्यावर, किशनगढ़, मालपुरा आदि स्थानों पर भी
- टांकला ग्राम (नागौर) की दरियां विश्व प्रसिद्ध है।
- टोंक के ऊनी नमदे प्रसिद्ध है, ऊन को कूट-२ कर बनाए जाते है।
⇒ बीकानेर जेल में गलीचे का कार्य सर्वाधिक सुन्दर माना जाता है।

⇒ कढ़ाई व कशीदाकारी = कपड़ो पर विभिन्न रंगो के रेशमी धागो से कढ़ाई का कशीदाकारी का कार्य किया जाता है।
सीकर झुन्झुनु के आसपास क्षेत्रों में कार्य किया जाता है।
⇒ प्चापटी = अभिप्राय को कपड़ो में काटकर दूसरे कपड़े पर टांग (सिल) दिया जाता है।

- **Rajasthan Gk PDF- क्लिक करे**
- **Hindi Test Quiz – क्लिक करे**
- **HINDI NOTES - क्लिक करे**
- **RAJASTHAN GK NOTES - क्लिक करे**

- **INDIA GK TOP QUIZ– क्लिक करें**
- **RAJASTHAN GK QUIZ – क्लिक करे**
- **GENERAL SCIENCE– क्लिक करें**
- **HINDI SAMAS VIDEO– क्लिक करे**

=> जरी व गोटे का काम : गोटे का काम मुख्यतः खण्डेला, जयपुर, भिनाय व अजमेर में होता है।
जरी का काम सवाई जयसिंह के समय में सूरत से लाया गया

=> पेचवर्क : कपड़ो को विविध डिजाइन में सिलना, शेखावाटी में प्रचलित

=> कपड़ो पर चित्रकारी =

(i) पड़ चित्रण = शाहपुरा व आसपास के क्षेत्र में विशिष्ट कला
शाहपुरा का जोशी परिवार इसमें सिद्धहस्त है।

(ii) नाथद्वारा की पिछवाइयां – श्री कृष्ण लीलाओं का चित्रण
नाथद्वारा में कृष्ण प्रतिमा के पीछे दिवारो पर कपड़े पर चित्रण

=> <u>मांडणा</u> – मकान की दीवारों व फर्श गेरु आदि रंगो से बनाए जाते है

=> ब्लू पॉटरी : क्वार्ट्ज व चीनी मिट्टी के बर्तनो पर नीले, हरे व अन्य रंग के चित्रण को ब्लू पॉटरी कहा जाता है। जयपुर की ब्लू पॉटरी प्रसिद्ध है। भारत में यह कला फारस से आई
कृपालसिंह शेखावत इसके सिद्धहस्त कलाकार है।

=> लाख का काम : लाख से चूड़ियां, खिलौना व सजावटी सामान।
लाख का काम जयपुर में सर्वाधिक है।
महाराजा रामसिंह के समय ब्लू पॉटरी व लाख के काम को भरपुर संरक्षण दिया गया।

=> टेराकोटा : पकाई हुई मिट्टी के बर्तन, खिलौने आदि
मोलेला गांव (नाथद्वारा) व बस्सी (चित्तौड़गढ़) में टेराकोटा कला प्रसिद्ध

=> अलवर में बारीकी से बनाने के कारण कागजी टेराकोटा कहते है

=> <u>मीनाकारी</u> = सोने चान्दी व आभूषणों पर मीना चढ़ाना मीनाकारी कहलाता
मीनाकारी कार्य के लिए भी जयपुर प्रसिद्ध है। मुगलों के समय फारस से लाई गई कला है, जयपुर में लाहौर से मानसिंह प्रथम द्वारा 16वीं शताब्दी में लाई गई।

⇒ थेवा कला - कांच की वस्तुओं पर सोने का सूक्ष्म एवं कलात्मक चित्रण किया जाता है। प्रतापगढ़ इसके लिए प्रसिद्ध सोनी परिवार इस कला के प्रसिद्ध ↔ प्रतापगढ़ का

⇒ कुन्दन = जयपुर में प्रचलित, स्वर्णाभूषणों में कीमती पत्थर जड़ना।
⇒ मुरादाबादी = पीतल के बर्तनों में खुदाई करके उस पर कलात्मक नक्काशी करना, जयपुर में कार्य सर्वाधिक, अलवर में भी कार्य प्रचलित

⇒ कोफ्तगिरी = फौलाद की बनी वस्तुएं जिस पर सोने के पतले तारों की जड़ाई कोफ्तगिरी कहलाती है।
कोफ्तगिरी जयपुर व अलवर में प्रचलित है।

⇒ बादला = पानी की बोतलें जिनमें लम्बे समय तक पानी ठंडा रहता है उसके लिए चारों ओर कलात्मक कपड़े का आवरण चढ़ाया जाता बादले जोधपुर के सर्वाधिक प्रसिद्ध है।

⇒ उस्ताकला = (मुनव्वती) = बीकानेर का उस्ता परिवार इस कार्य में प्रसिद्ध ऊंट की खाल पर सोने एवं चांदी से कलात्मक चित्रण को।

⇒ हाथी दांत व चन्दन पर खुदाई का काम ⇒ जयपुर में प्रचलित
⇒ पेपरमेशी (कुट्टी) कागज की लुगदी से, जयपुर व उदयपुर में प्रसिद्ध
⇒
⇒ मिरर वर्क = जैसलमेर के ग्रामीण क्षेत्रों में कपड़े पर शीशे के छोटे-2 टुकड़ों को सिलने का काम बहुतायत से किया जाता है।

⇒ तारकशी = बारीक तारों के विभिन्न आभूषणों को नाथद्वारा में बनाया जाता।
⇒ रत्नाभूषण = मूल्यवान पत्थरों युक्त सोने चांदी के आभूषण इस कार्य जयपुर (पन्ने की सबसे बड़ी अन्तर्राष्ट्रीय मण्डी) प्रसिद्ध है।

=> चमड़े की कलात्मक वस्तुएं = जूतियाँ या मोजड़िया जोधपुर की प्रमुख प्रसिद्ध है अन्य केन्द्र - जयपुर, नागौर, जालौर

=> चान्दी की कलात्मक वस्तुएँ = चान्दी की डिब्बियाँ, अफीमदानियां कटोरदान, सिगरेट केस, किवाड़ जोड़िया बीकानेर की प्रसिद्ध
उदयपुर में - चान्दी के खिलौने, पशु-पक्षी सिगलीघर घराने की प्रसिद्ध

=> लकड़ी के आकर्षक खिलौने सवाई माधोपुर में
=> बाड़मेर में निर्मित लकड़ी का नक्काशीदार खुदाई का फर्नीचर

=> मूर्तिकला = सुन्दर मूर्तियां बनाने का कार्य जयपुर में होता है। जयपुर में मुख्यतः सफेद संगमरमर की मूर्तियां प्रसिद्ध है। तलवाड़ा (बांसवाड़ा) में सोमपुरा जाति के मूर्तिकार काले-संगमरमर की मूर्तियाँ बनाते है -
लाल पत्थर से अलवर की थानागाजी तहसील में सिलावट बनाते हैं

=> जोधपुर में जस्ते की मूर्तियाँ, व कलात्मक वस्तुएं बनाई जाती है।
=> मथैरण कला = बीकानेर क्षेत्र में अधिक प्रचलित।
लोक देवी-देवताओं के भित्ति-चित्र, ईसर, तोरण, गणगौर आदि का निर्माण एवं इन्हे विभिन्न आकर्षक रंगो से सजाना।

=> आलागीला कारीगरी = पत्थर व चूने की दीवारों पर चूने व कली के साथ आकर्षक चित्रकारी करना। चुनगरो द्वारा। बीकानेर व शेखावाटी क्षेत्र में अधिकांश कारीगर।

=> ऊंट कतराई = ऊंट के शरीर के बालो को कतर कर कई तरह की आकृति उकेरने की कला।
रायका व रबारी जाति को यह कला धरोहर के रूप में मिली
=> मसुरिया साड़ी / कोटा डोरिया = (कैथून - कोटा) ब्लैक पॉटरी - कोटा

- **Rajasthan Gk PDF- क्लिक करे**
- **Hindi Test Quiz – क्लिक करे**
- **HINDI NOTES - क्लिक करे**
- **RAJASTHAN GK NOTES - क्लिक करे**

- **INDIA GK TOP QUIZ– क्लिक करें**
- **RAJASTHAN GK QUIZ – क्लिक करे**
- **GENERAL SCIENCE– क्लिक करें**
- **HINDI SAMAS VIDEO– क्लिक करे**

GK/GS टॉप 1000 प्रश्न –
Download Now

राजस्थान GK हस्त ल खत नोट्स
DOWNLOAD NOW

भारत सामान्य ज्ञान टेस्ट-शुरू करे

RAJASTHAN GK E-BOOK - DOWNLOAD

RAJASTHAN GK TEST–START NOW